!!श्री सम्मेदशिखराय नमः!!

पारस विद्या योजना

उत्तर प्रदेश प्रकाश भवन

अन्तर्गत श्री सम्मेद शिखर जी विकास समिति

(आयकर धारा 80-जी के अन्तर्गत पंजीकृत)

कुन्द कुन्द मार्ग मधुबन, शिखरजी जिला - गिरिडीह पिन कोड-825329 (झारखंड), भारत

फोन : 06558-232366 / 67 / 71 | Email : info@shikarjiup.org

झारखंड राज्य के गिरीडीह जिले में श्री सम्मेद शिखरजी विश्व प्रसिद्ध एवं महानतीर्थ है। हर साल देश-विदेश के लाखों जैन श्रद्धालु यहां तीर्थयात्रा के लिए आते हैं। जैन धर्म और संस्कृति के जीवंत प्रतीक स्वरूप यह सिद्धक्षेत्र 24 तीर्थंकरों में से 20 की निर्वाणभूमि है। इस पावन क्षेत्र के आसपास अधिकांश जनजातीय समुदाय के लोग निवास करते हैं। यह क्षेत्र पिछड़े होने के साथ विकास एवं अन्य सुविधाओं से वंचित होने के कारण कई समस्याओं से ग्रसित है। इस क्षेत्र के लोगों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए उत्तर प्रदेश प्रकाश भवन द्वारा साल 2006 से निरंतर प्रयास किया जा रहा है। समिति ने 2006 में क्षेत्र के 14 गांवों का चिरस्थायी विकास करने के उद्देश्य से ग्रामवासियों के जीवन स्तर में सुधार एवं उनके सम्मानपूर्वक जीवनयापन की दिशा में विभिन्न योजनाओं के संचालन की शुरुआत की। इस लक्ष्य के साथ कार्य करते हुए समिति ने 5 सालों में ही यानी वर्ष 2011 तक यहां कृषि, सिंचाई, पशुपालन, व्यावसायिक, प्रशिक्षण, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, साक्षरता, स्वास्थ्य, ग्रामीण संरचना विकास, ग्रामीण उद्योग जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया। इन्हीं प्रयासों में से एक है पारस विद्या योजना। यह मात्र योजना नहीं है बल्कि ग्रामीणों के उज्ज्वल भविष्य का मजबूत आधार है।

पारस विद्या योजना : इस योजना ने 2006 से 2011 तक मधुबन पंचायत के 14 गांवों के सभी विद्यालयों के लगभग 2 हजार 200 बच्चों को आगे बढ़ना हौसला देते हुए उनके सपनों में रंग भरने का काम किया। योजना के माध्यम से सभी बच्चों को दो जोड़ी यूनिफॉर्म, जूते-मौजे, गर्म कपड़े किताबें, कॉपी, स्कूल बैग, खेल-कूद के सामान जैसी सामग्री उपलब्ध कराई गई।

महिलाओं की आर्थिक समृद्धि : इसके साथ ही सभी गांवों में महिला सशक्तिकरण के लिए उनकी साक्षरता कक्षाओं का भी संचालन किया गया। जिसमें लगभग 20 ग्रुप के माध्यम से महिलाओं को साक्षर करने का कार्य किया गया। महिलाओं की आर्थिक समृद्धि एवं उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए सिलाई प्रशिक्षण भी दिया गया। इन सार्थक प्रयासों से महिलायें रोजगार से जुड़कर आत्म-निर्भर

हुईं। इसके अलावा गांवों में अगरबत्ती, कपड़े के फूल, बिन्दी बनाने का प्रशिक्षण भी दिया गया।

आधुनिक खेती का प्रशिक्षण : गांवों में पुराने तरीके से खेती कार्य किया जाता था इससे अनाज की उपज कम होती थी। इस दिशा में 3 कृषि विशेषज्ञों के द्वारा गांवों में आधुनिक तरीके से खेती करना सिखाया गया, धान, मक्का, सब्जी, आदि की खेती करने का तरीका बदला गया परिणाम स्वरूप पहले से कई गुना ज्यादा फसल की पैदावार होने लगी।

संस्था इस परियोजना को बन्द नहीं करना चाह रही थी किन्तु किन्हीं कारणों से परियोजना बन्द हो गई। इन सभी योजनाओं के बंद होने के लगभग 10 साल बाद गांवों के प्रबुद्ध लोगों ने संस्था से आग्रह किया कि पूर्व की तरह संस्था गांवों में शिक्षा का कार्य करे। ग्रामीणों ने बताया कि गांवों के विद्यालयों में बच्चे को पढ़ाने के लिये बच्चों के अनुपात में शिक्षकों की कमी है जिससे बच्चों का भविष्य खराब हो रहा है। ग्रामजनों के इस आग्रह पर संस्था के पदाधिकारियों ने निर्णय लिया कि संस्था पुनः मधुबन (शिखरजी) एवं आस-पास के क्षेत्र में पूर्ववत ही शिक्षा का कार्य करेगी। संस्था ने अगस्त 2022 में पारस विद्या योजना का पुनः प्रारंभ किया। शिखरजी क्षेत्र के आस-पास ज्यादातर संथाली भाषा बोलने और समझने वाले लोग रहते हैं। हमारा कर्तव्य बनता है कि हम इस समाज के बेहतर कल के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार की दिशा में कुछ निर्णायक कदम बढ़ाएं। हमारे तीर्थ का संरक्षण एवं संवर्धन करने के साथ ही इस समाज को भविष्य को संवारना भी हमारे लिए महत्वपूर्ण कार्य है। अगर हम आस-पास के समुदाय को विकास की मुख्यधारा में लाने में उनका सहयोगी बनेंगे तो निश्चित तौर पर यह समुदाय भी हमारे कार्यों एवं तीर्थ संरक्षण में सहयोगी बना रहेगा।

वर्तमान में पारस विद्या योजना द्वारा गांव के 150 से अधिक युवक- युवतियों को प्रशिक्षण देकर कुशल एवं सशक्त बनाया जा रहा है। इन प्रशिक्षणों में समय प्रबंधन, अनुशासन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। संस्था द्वारा मधुबन एवं इसके आस-पास के 28 गांवों में शिक्षा का कार्य कर रही हैं इस कार्य के लिए क्षेत्र के ही प्रशिक्षित एवं योग्य 35 शिक्षकों की नियुक्ति की है।

इन्हें पारस विद्या योजना द्वारा मानदेय भुगतान किया जा रहा है। यह 28 गांव अधिकांश विकास से वंचित एवं पिछड़े हैं। इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति तथा दुर्बल घटक वर्ग के लोग निवास करते हैं। यहां निवासरत अधिकांश

परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं।

शिखरजी के आस-पास के 28 गांवों की जानकारी : 1. विरनगड्डा 2. खपैयबेडा 3. सिंहपुर 4. बागदाहा 5. जय नगर 6. भोजेदाहा 7. हरलाडीह 8. पीपराडीह 9. रोहनटांड 10. मौजपूर 11. ठूठागोड़ा 12. बाराडीह 13. दलान चलकरी 14. पर्वतपूर 15. बरमसिया 16. बरियार पूर 17. बारासिंघा 18. दुधनिया 19. तेलिया बहियार 20. मंझलाडीह 21. पाण्डेडीह 22. मंगर तिलैया 23. गोयचौथा 24. नवासार 25. मोहनपूर 26. कौंझिया 27. बाँध और 28. बरहागढ़ी।

क्यों आवश्यक है पारस विद्या योजना का सतत एवं प्रभावी संचालन?

पारस पर्वत की तीर्थयात्रा के सहयोगी डोली वाले हमारे लिए कितने आवश्यक हैं? इनके सहयोग बिना पहाड़ की वन्दना क्या संभव है?यह सभी पारस पर्वत के 8-10 किमी के परिसर में रहते हैं, अतः यह पारस पर्वत के संरक्षक भी हैं।

यह डोली वाले स्थानीय निवासी मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित हैं। गरीबी का उन्मूलन शिक्षा से ही संभव है। परन्तु यहाँ विद्यालय दूर-दूर हैं और उनमें पर्याप्त शिक्षक भी नहीं है। इसलिए पारस विद्या योजना इनके उज्ज्वल भविष्य का मजबूत आधार स्तंभ है।

पारस विद्या ने मधुबन के निकट 50 विद्यालयों में एक या दो प्रशिक्षित शिक्षक देने का लक्ष्य रखा है। प्रत्येक 8-10 विद्यालय पर एक-एक पर्यवेक्षक की नियुक्ति की है जो प्रतिदिन इन विद्यालयों में जाकर निरीक्षण करता है कि गुणवत्तापूर्वक शिक्षण निर्देशानुसार हो रहा है या नहीं। विद्यालयों में खेल-कूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु भी सहयोग किया जाता है।

इस प्रकार **'पारस विद्या योजना'** प्रेरक की भूमिका में है। प्रति शिक्षक रु. 5000 प्रतिमाह, प्रति पर्यवेक्षक का 9000/- प्रतिमाह खर्च होता है। उच्च स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु *Zoom* तकनीक से माह में चार बार कराया जाता है उसका भी प्रति माह काफी अधिक व्यय होता है। धन की अत्याधिक कमी से योजना पूर्ण गति नहीं पकड़ पा रही है। योजना की उपयोगिता की गंभीरता समझना हम सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है। गांव के अध्यक्ष और मंत्री की जिम्मेदारी पर ही इन गांवों के स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति की गई है, जिसके बहुत अच्छे परिणाम आ रहे हैं। पूरे काम को अध्यक्ष और मंत्री बहुत अच्छे से देख रहे हैं।

प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में जो पाठ्यक्रम का कार्य चल रहा है वह सराहनीय है। प्रशिक्षण में सिखाई गई पढ़ाने की नई-नई तकनीक से स्कूलों में पढ़ाई का तरीका बदल गया है। अब बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाया जा रहा है। सभी प्रशिक्षित शिक्षक पूरी मेहनत और ईमानदारी के साथ बच्चों को पढ़ाने और सिखाने का कार्य कर

रहे हैं। वन विभाग के सहयोग से बच्चों को शैक्षणिक भ्रमण भी कराया गया जिसमें जल, जंगल, जमीन के विषय में उन्हें विस्तृत जानकारी दी गई।

इस कार्य में एक चुनौती यह भी है कि सभी विद्यालयों में संथाली भाषा बोलने एवं समझने वाले बच्चों की संख्या अधिक है और उन्हें पढ़ाने के लिये कोई भी शिक्षक उपलब्ध नहीं है। इस समस्या से निजात पाने हेतु संस्था द्वारा 2 संथाली भाषा के शिक्षकों का चयन किया गया है जो बच्चों को उनकी भाषा का ज्ञान देने का कार्य करेंगे।

कला एवं शिल्प : पारस विद्या योजना के प्रशिक्षणार्थियों को इस कार्यक्रम के तहत आर्ट एवं क्रॉफ्ट तथा ड्राईंग-पेन्टिंग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद शिक्षक अपने विद्यालयों के बच्चों को कला एवं शिल्प सिखाते हुए उनकी रचनात्मकता को निखारने का कार्य कर रहे हैं।

खेलकूद व्यवस्था-छात्रों के शारीरिक विकास के लिए खेल-कूद के महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक स्कूल में छात्रों को खेल-कूद सामान उपलब्ध कराया गया। इन गतिविधियों से बच्चों में नई उमंग और स्फूर्ति बनी रहती है।

उद्देश्य-मधुबन पंचायत एवं इसके आसपास के 50 विद्यालयों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण व्यवस्था के साथ स्थानीय जन-जीवन को बेहतर बनाने एवं विकास की मुख्यधारा को जोड़ने के लिए विभिन्न कार्यों का संचालन-1. गांवों में गुणात्मक शिक्षण 2. पूर्ण महिला साक्षरता 3. पूर्ण स्वच्छता 4. ग्रामीण रोजगार 4. कृषि विकास 5. महिला सशक्तिकरण 6. ग्रामीण अधोसंरचना में सहयोग 7. स्वास्थ्य सेवा 8. स्वयं-सहायता महिला समूहों का सशक्तिकरण 9. खेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन 10. सभी के विकास हेतु जन-जागरुकता।

सिद्धान्त-1. प्रेरक की भूमिका 2. जनभागीदारी 3. सबका साथ, सबका विकास 4. सशक्तिकरण 5. जागरुकता, नेतृत्व विकास 6. गांवों को स्मार्ट बनाना, इत्यादि।

विशेषताएं-सभी कार्यक्रमों का प्रभावशाली पद्धति से क्रियान्वयन 2. समय-समय पर समीक्षा कर परिणाम दर्शना 3. कार्य सम्पादन में ग्रामवासियों का पूर्ण सहयोग लेना 4. शासन की योजनाओं का प्रचार-प्रसार तथा सभी अधिकारियों का सहयोग लेना 5. शासन से वित्तिय सहायता की अपेक्षा न करना 6. सभी कार्यों में आधुनिक पद्धति का क्रियान्वयन करना। 7. गुणवत्ता से समझौता न करना 8. जनभागीदारी से स्मार्ट विलेज बनाने में योगदान देना।

कृषि- परियोजना में कृषि विशेषज्ञ द्वारा गांव में विजिट कर उनके मार्गदर्शन में जैविक पद्धति से बागवानी करने का सुझाव ग्रामीणों को दिया गया। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। संस्था इन गांवों के स्थायी विकास तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को सम्मान पूर्वक जीवन यापन के लिए हर संभव कार्य करने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

भविष्य का संकल्प

सभी क्षेत्रों के समग्र विकास का संकल्प।

- गांव में शिक्षा, साक्षरता, स्वच्छता एवं रोजगार महिलाओं की आर्थिक समृद्धि एवं स्वावलंबन।
- कृषि विकास से किसानों की आय बढ़ाना
- गृह उद्योग एवं स्व-सहायता समूहों से महिलाओं को जोड़ना।

सम्मेद शिखर जी तीर्थ के संरक्षण एवं संवर्धन में स्थानीय लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए इन गतिविधियों का संचालन आवश्यक है। इसलिए संस्था ने यह परियोजना प्रारम्भ की है। शासन द्वारा भी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से विकास कार्य हो रहे हैं।

हमारे समाज के सभी सम्मानीय बंधुओं से अनुरोध करते हैं कि आप इस कार्य में खुले हाथों से धन राशि प्रदान करें। आपका सहयोग किसी को सुरक्षित और उज्ज्वल भविष्य प्रदान कर क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होगा। आपके सुझाव भी सादर आमंत्रित हैं।

PARAS VIDYA YOJNA A/C - 480910100005187 (SAVING ACCOUNT)

BANK OF INDIA BRANCH NAME - PARASNATH IFSC CODE - BKID0004809

paras # 9811374961

उत्तर प्रदेश प्रकाश भवन
श्री सम्मेद शिखर जी विकास समिति
कुन्द कुन्द मार्ग मधुबन, शिखरजी जिला - गिरिडीह पिन कोड-825329 (झारखंड), भारत
फोन : 06558-232366 / 67 / 71 | Email : info@shikarjiup.org

उत्तर प्रदेश प्रकाश भवन

ACCREDITED